मैं कब तक हँस सकूँगा . . . ?

"अंत में "आँसू" ने हँसना" !

डॉलपुर की एक अकेला रास्ता। आसमान उसका नीला कपड़ा छोड़कर काला कपड़ा पहनना का काम शुरु कर दिया। चिड़ियाँ उसकी घर पहुँचने के लिए जल्दी-जल्दी उड़ती था। उस सुनसान रास्ता में एक छोटी लड़की रोने से बैठा। उसकी आँखों भरी थी।

उस समय एक बूढ़ा आदमी उसकी पास आकर पूछा "क्यों तुम इधर बैठी ?, क्यों तुम रोने ? उस लड़की ने उसकी कपड़ा से उसकी आँखों और चेहरा स्वच्छ करे और धीरे आवाज से बोली " बाबा, मैं जिंदगी में हँस न सकते। मेरा जीवन में मुझे एकता साथी है वह आँसु है। इतना कहकर वे रोना करना शुरु कर दिया। उस आदमी ने पूछा, " क्या, तुम्हारे नाम बेटी ? उस लड़की ने कहा 'आँसू'। उस आदमी बहुत –

आश्चर्य होगा। आँसू ! तुम क्या मतलब है ? मैं तुम्हारे नाम पूछा, समझा। उस बूढा आदमी कहा। उस लड़की ने उत्तर दिया कि, हां बाबा मेरा नाम है आँसु। मैंने मेरे लिए इस नाम दिया, क्योंकि आँसू मेरा आत्ममित्र है। ये विचित्र है, हां तुम्हारा माता और पिता कहाँ है? उस आदमी पूछा। वे मेरे बिना एक विदूर दिशा चले आँसू उत्तर दिया। कहाँ ? आँसु ने कहा "परलोक"। नीला आसमान अचानक काला हो गया। उस बूढा आदमी मन की और काला हो जाये।

आँसु ने बोला "मैं इधर एक अनाथालय में इतना दिन रहा"। उस दादा ने कहा 'तुम उस आलय में चलो, जल्दी, वह व्यक्तियाँ तुम्हे इंतजार करती है। चलो, जल्दी। आँसु ने कहा कि मैं वह जा नही। उस व्यक्तियों इतना दिन तक मैंने बहुत वेश कर दिया। असली मैं आज रात मरने कि निश्चय किया और इधर आये, तब मैं तुम्हारे देखा।

ऐसे उस बूढा आदमी और आँसू की बातों कुछ देर चला। तब आँसू सो जाए।

जब आँसू उठा, तब प्रभात हो जाए। आँसू देखने समय वह एक घर था, घर का एक कमरा में वह सोता था। वह एक मेज पर कुछ भोजन देखा। आँसू किसी को बताया बीना उस भोजन खाना, क्योंकि वह बहुत भूख था। उस समय उस बूढा आदमी और एक औरत उसकी पास आये। आँसू ये मेरा पति, मेरा नाम गोपाल, और मेरा पत्नि लक्ष्मी। हमारा लिए ईश्वर एक भी बच्चों न देगा। तुम खुशी भी तो तुम इधर हमारा बच्चो बना और रहा। आँसू हँस करा। वह उसकी जिंदगी का पहला हँस था। इतना कि उसकी जिंदगी का एक वहा सवाल था की "मैं कब तक हँस सकूँगा... उस सवाल को वह एक उत्तर था।

उस कि तक आँसू गोपाल को पिता और लक्ष्मी को माता कहा। गोपाल एक किसान था, और उस काम से उस परिवार पालन पोषण करता।

गोपाल आँसू को एक विद्यालय में जोड़ना। आँसू को मित्रों और अध्यापकों उसकी नाम सुनकर आँसू को मजाक करना। इस तरह कुछ दिन चला।

पर, अचानक लक्ष्मी को बीमार पड़ा। गोपाल और आँसू बहुत डर गया। और गोपाल लक्ष्मी को आसपताल चला तो लक्ष्मी को आँखों को गोपाल और आँसू को ने देखा। उसका शरीर अचंचल हो गया। और लक्ष्मी इस लोक से एक याद बन गया। गोपाल और आँसू के लिए वह असहनीय हो गये। कुछ दिन ऐसे चला।

लक्ष्मी के मृत्यु के बात गोपाल अस्वास्थ्य हो गया। वह आँसू को उसके पास आकर बोला आँसू, एक दिन मैं भी इस लोक से चला। तभ तुम अकेला हो गये। इतना सुनकर आंसु गोपाल को आलिं-गन करने से बोला: तुम भी मेरा इधर अकेला बनकर न जाने! बाबा। मैं तुम्हारे बड़ा प्यार

करती है। गोपाल आँसू को चुंबन दिया।

पर धीरे - धीरे गोपाल का स्वास्थ्या बिगाड़ना लगा। तब उसको काम करने का स्वास्थ्या नहीं था। आँसू ने स्कूल को आने के बाद पडोसियों की घर झाडु करना और घर का पालन किया। फिर भी वे पडाई में चतुर था। वे बहुत मेहनत से एस एस एल सी बडा मार्क से पास करना।

तब तो गोपाल एक बीमार वाला व्यक्ति बन गये। आँसू ने अच्छे तरफ गोपाल को पालन करना। एक दिन गोपाल आँसू को उसकी पास कहता, आँसू मैं बहुत बूढा हो गये, मैं अचानक मेरा लक्ष्मी को पास चलना को इंतजार करती है। और लक्ष्मी मेरे तलाश करती है। आंसू मेरा प्यारी लाट तुम इस बातों को न भूल गये को, जिंदगी में हार न गये, जय तुम्हारा मित्र है। और समझा को, कभी कभी भीड़ की खाल पर भेड़िया भी छिप रहती है।

इतना कहकर गोपाल का आँख खतम गये। उसको आँसू को देखना न सकते। उसकी शरीर निश्चल हो गया। आँसू को समझता की गोपाल मरना। वह गोपाल को हजार तक चुबंन दिया। आँसू का चेहरा लाल-पीला बन गया। वह एक बडे आवाज से रोने की। मैं इस जिदगी में कब तक हँस सकूँगा...? मैं असली आँसु है। वह, उसकी बातों कोई नही सुनती। कभी नही सुनती।

आँसु जब अकेला और रोते तब वह गोपाल की बातों याद करना। की जिदगी में न हारना और जीत और हँसना तुम्हारा मित्र बना"। वह उसकी जिदंगी का पहला तथ था। आँसू सोना की पहले, पढाई का पहले गोपाल की इस बातों याद करना। वह आँसू को एक नया जीवन था।

आँसू एक कॉलेज में जोडना। और बडा मेहनत से पढना।

इस तरह आँसू सिविल सर्वीस को तय्यार शुरू करना। और आज आँसू ने एक "ऐ ए एस आफीसर बना।

और एक दिन आँसू को पूर्वविद्यालय में एक बहुत बड़ा सम्मेलन हो गये। इस सदस्यों में प्रदान व्यक्ति था, आँसू"। आँसू का पहला अध्यापकों और मित्रों कौन ने आँसू का बचपन में उसका मजाक करना वह आज आँसू को आदरण करने केलिए वहाँ आये। आँसू स्टेज पर बैठा। और आँसू को एक प्रभाषण दिये केलिए उतरना और वह कहा, "मैं आँसू"। सदस्यों को एक बहुत बड़ा हँसना की आवाज़ आँसू ने सुनी। और आँसू भी हँसना। और वह कहा, मेरा जिंदगी में एक बहुत बड़ा सवाल था कि, मैं इस जीवन पर कब तक हँस सकूँगा.... वह एक मौन उत्तर दिया सवाल था। इसलिए मैं मेरे लिए "आँसू" नाम दिया। इस एक विचित्र नाम है, पर मेरा लिये इस नाम बहुत सुपरिचित है।

मैं इस जिंदगी में अकेला थी, वह असली में अकेला नहीं थी। गोवाल की बातों और मेरा ईश्वरविश्वास और कठिनप्रयत्न मेरा मित्र था। आज मैं गोवाल का इच्छा और अंत की अभिलाष प्राप्तवान कि जिंदगी में कभी भी हारना। और आज मैंने मेरा जिंदगी का उस बड़ा समस्या और सवाल को उत्तर दिया; हम कब तक हँस सकूँगा। इसका उत्तर यह है, रोने की बात! आं रोने की बात हमें हँस कहना सकूँगा। रोना की प्रतिवचन नहीं है हँसना वह रोना की प्रतिफल है हँसना। एक आरोहण का बाद एक अवरोहण है। इसी तरह सुख की बाद एक दुख है और दुख की बाद सुख है। सुख और दुख जीवन का दो अनिवार्य भाग है। इतना कहकर आँसू की आखों आँसू से भरी गया। पर वह दुख का आँसू नहीं था, पर एक बहुत बड़ा आनंद की आँसू। इस आनंद की आँसू मुसकुरात का एक था।

आँसू को सुना सदस्यों को भी आनंद से भरा। उसकी भी आँखों आँसू से भरा। और आँसू ने उसे देखा एक बहुत बड़ा मुस्कुराहट से स्टेज को बाहर चला।

और तब आँसू जिंदगी में हँसना। और तब तक आँसू को हँस सकेगा।

ऐसे, अंत में आँसू ने हँसना!